National Research Journal of Social Sciences
Volume-10, Issue-1, January-June 2025
PP: 132-137

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

मधु कांकरिया के उपन्यासों में वैश्वीकरण का प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. नियति कुमारी

सहायक प्राध्यापिका (अतिथि)

नागार्जुन उमेश संस्कृत महाविद्यालय, तरौनी, दरभंगा (बिहार)

सारांश–

हिन्दी-कथा-साहित्य में 'उपन्यास' एक महत्त्वपूर्ण विधा है। हिन्दी उपन्यास का भारतीय नवजागरण से गहरा सम्बन्ध है। उसमें जीवन की सफलता एवं व्यापकता विस्तार के साथ स्थापित होती हैं। उपन्यास का मूल उद्देश्य यथार्थ का बोध कराना है। प्रत्येक उपन्यासकार घटनाओं के माध्यम से जीवन की अभिव्यक्ति करता है। हिन्दी साहित्य को सशक्त बनानेवाली लेखिकाओं में मधु काँकरिया का नाम प्रमुख हैं। उन्होंने अपने जीवन की अनुभूतियों को लेखनी के माध्यम से दुनिया के सामने लाने का प्रयास किया है, जिन्हें इनके उपन्यासों में बखूबी देखा जा सकता है। समाज की ज्वलन्त समस्याओं को अत्यन्त मार्मिक ढंग से इन्होंने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। वैश्वीकरण के कारण नारी के बदलते परिवेश, नक्सलवादी आन्दोलन, नारी शोषण, वेश्यावृत्ति की समस्या, सामाजिक व राजनैतिक अराजकता, नशेबाजी, गरीबी आदि विषयों को मधु जी ने अपने उपन्यास का विषय बनाया है।

बीज शब्द– वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, मूल्य-विघटन, नारी-विमर्श, उपभोक्तावाद, आतंकवाद।

प्रस्तावना–

वैश्वीकरण के समय में अनेक ऐसे विषय हैं, जिनपर उपन्यास लिखे जा रहे हैं; जैसे-आदिवासी विमर्श और विस्थापन, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, धार्मिक और साम्प्रदायिक संकीर्णता। साम्प्रदायिकता पर आधारित उपन्यास है- 'हमारा शहर उस बरस' (गीतांजलीश्री), 'कैसी आग लगाई' (असगर वज़ाहत), 'नागफनी के जंगल में', 'कितने पाकिस्तान' (कमलेश्वर), 'आखिरी कलाम' (दूधनाथ सिंह) आदि। आदिवासी विमर्श और विस्थापन पर आधारित उपन्यास है- 'गायब होता देश' (रणेन्द्र), 'जहाँ जंगल शुरु होता हैं' (संजीव), 'जहाँ बाँस फूलते हैं' (श्री प्रकाश मिश्र) इत्यादि। इसके अतिरिक्त 'शाम भर बातें' दिव्या माथुर का प्रसिद्ध उपन्यास है, जो प्रवासी दुनिया में भूमण्डलीकरण के समय में किस तरह से पार्टियों का चलन एक सभ्यता बन गई है, इसको गहराई के साथ सामने लाता है। विद्याभूषण का 'लौटना नहीं है' में स्त्री-जीवन की विषमताओं, विडम्बनाओं और जटिलताओं के साथ-साथ स्वतंत्रता और संघर्ष की गाथा को प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार हिन्दी में भूमण्डलीकरण के प्रभाव में अनेक उपन्यास लिखे जा रहे हैं। 1991 ई. के बाद भारत में आए भूमण्डलीकरण और उदारीकरण की सैद्धान्तिकी और उसके मूल्यों का समर्थन और प्रचार की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। 1993 में रचित सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है।

इसके अलावा अनेक उपन्यासकारों में मधु काँकरिया अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उपन्यास कला में निपुण मधु जी जीवन की विभिन्न पहलुओं को, अपने निजी अनुभवों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। इनके साहित्य से गुजरने के बाद महसूस होता है कि परिवेश ही उनके लेखन की आधारशिला रही है। बचपन में ही मधु जी ने अपनी

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

माँ को पैसों के लिए अपने पिता पर आश्रित रहते हुए देखा। इससे उनके मन में नारी के प्रति विचार परिवर्तित हुआ। इसके अतिरिक्त स्त्री को निर्णय लेने का अधिकार नहीं, उस पूरे परिवेश के प्रति मधुजी के मन में प्रतिरोध ने जन्म लिया। एक तरफ तो समाज में स्त्री शिक्षा की वकालत की जा रही थी, तो दूसरी ओर गरीबी व दहेज समस्या से बचने के लिए दीक्षा दिलवाई जा रही थी। इससे स्त्री अपने बचपन को खो रही है। इसलिए मधु जी ने संकल्प लिया कि वे इन समस्याओं को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने उजागर करेंगी; ताकि लोगों की दृष्टि उस तक पहुँच सके। इन्हीं कारणों से हिन्दी की अनेक लेखक व लेखिकाओं में मधु काँकरिया अपना अलग ही स्थान रखती हैं। डॉ. सुनीता कावले का मानना है कि- "समकालीन महिला लेखन तथा कथित संकीर्णता, नैतिकता तथा अनैतिकता के काले सफेद घेरों से बाहर निकलकर नितान्त मानवीय आधार पर अपनी अस्मिता को तलाशने तथा पहचानने से जुड़ा लेखन है और इस लेखन की एक मुख्य सूत्रधार के रूप में मधु काँकरिया का स्थान अनन्य साधारण है।"[1]

1. खुले गगन के लाल सितारे–

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में मध्यवर्गीय सनातन मारवाड़ी परिवार की कन्या और नक्सलवादी युवक के बीच प्रेम को दिखाया गया है। मणिदीपा और इन्द्रनील उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। इन्द्रनील नक्सलवादी आन्दोलन में गुम हो जाता है और मणिदीपा इन्द्र का पता लगाने के लिए बुज़ुर्ग नेता गोविन्द दा के पास आती है। आजादी प्राप्ति के 20 वर्ष बीतने के पश्चात जनता के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन नहीं होते हैं। इस पर ध्यान न देकर नेतागण देश की मुक्ति बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में खोज रहे हैं। इसके पीछे वैश्वीकरण की प्रक्रिया है।

इस उपन्यास में आदिवासियों की समस्या को शामिल किया गया है। इन आदिवासी स्त्रियों को पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं हैं। एक स्त्री साड़ी पहनकर बाहर जाती है, तो दूसरी घर के अन्दर नंगी बैठी रहती है। एक परिवार तो ऐसा है, जहाँ नौ वर्ष के बच्चे का दोनों पैर बेकार हो गया है। वह जानवारों की तरह हथेलियों और घुटनों के सहारे सड़क पर चल रहा है। सड़क पर लगातार घर्षण से उसके पैर लहुलूहान हैं। फिर भी गरीबी के कारण परिवार इतना पैसा भी नहीं जुटा पा रहा था कि उसका इलाज करवा सके। परिणामस्वरुप लेखिका का कथन है कि- "गरीबी, भयंकर गरीबी.....पत्तियाँ उबालकर खाते लोग, नीम की निमौलिया चबाते लोग, कूड़े के ढ़ेर से अन्न के दाने बीनते लोग। अकाल के दिनों में अपनी संतानों को बेचते लोग।"[2] इसके केन्द्र में वैश्वीकरण का प्रभाव नजर आता है। जंगलों की कटाई होने से औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हो गई है, जिससे बिरहोर, बिरजिया एवं कोरमा जैसी जनजातियाँ दिनोंदिन विलुप्त होती जा रही है।आदिवासी की समस्या के समाधान के लिए मणि और आलोक जी भगत 'वन बंधु कल्याण निकेतन' नामक संस्था से जुड़ते हैं। आदिवासियों की समस्या को देखकर आलोक जी भगत प्रतिज्ञा लेते हैं कि- "जब तक आदिवासी समाज के लिए कुछ नहीं कर लूँगा, आजीवन सिले वस्त्र नहीं पहनूँगा। चप्पल नहीं पहनूँगा, इनके बीच रहकर इनके लिए इनका होकर, इनके जैसे ही रहूँगा।"[3]

वैश्वीकरण से अमीर देश और अमीर हुए और गरीब देश और गरीब हुए। गरीब जनता के रोजगार में कमी आई। श्रम सस्ता हो गया। ज्यादा काम मशीनों से होने लगा, जिससे मजदूरों के रोजगार में कमी आई है। रोजगार में कमी के कारण गरीबी बढ़ती गई। किसान और गरीब होते गए और मजदूर भी और विपन्न होते गये। आम जनता में एक विद्रोह पनपता गया और नक्सलवाद ने जन्म ले लिया। नक्सलवादियों की समस्या पर आधारित प्रस्तुत उपन्यास में भारत के गाँवों के किसान की दयनीय स्थिति, उनके गिरवी रखे खेत, हत्या, कर्जा, अस्पृश्यता तथा भयानक गरीबी का वर्णन किया गया है। शोषितों और शोषकों के बीच मतभेद को दिखाया गया है। इन्द्र देशप्रेमी था,

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

इसलिए देश की दयनीय अवस्था देखकर आम जनता के समान अधिकारों के लिए नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल हो जाता है। गोविन्द दा शोषितों के प्रति होनेवाले अत्याचार का अंत करने के लिए नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल हो जाता है। इस आन्दोलन से फायदे कम और नुकसान ज्यादा हुए। कई क्रान्तिकारी मार दिये गये। पुलिस गाँव वालों को हानि पहुँचाने लगी। नक्सल बाबू मणि को बताते हैं कि नक्सलवादियों की व्यक्तिगत हिंसा एवं सांस्कृतिक क्रान्ति के नाम पर मूर्ति भंजन, स्कूलों पर आक्रमण, पुस्तकालयों पर आक्रमण आदि द्वारा जनता के बीच आक्रोश उत्पन्न कर पुलिस प्रशासन इसका लाभ उठा रही है, ताकि लोग अपनी सहानुभूति खो बैठे। पुलिस कैदियों को विकलांग बना रही है। नवल बाबू का कथन है- "साला आज तक बलात्कारियों, हत्यारों, खूनियों और डकैतों को इस प्रकार पशुओं की तरह लोहे की छड़ों से नुकीले बूटों से रौंद-रौंद कर नहीं मारा गया, जिस प्रकार आजाद देश में इस पीढ़ी को रौंदा गया है।"[4]

2. सलाम आखिरी–

मधु काँकरिया का दूसरा उपन्यास 'सलाम आखिरी' में कलकत्ता महानगर के सोनागाछी, बहु बाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर जैसी जगहों का आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इसके माध्यम से देह-व्यापार का खुला बाजार प्रस्तुत कर उनके मूल कारणों कों ढूंढ़ निकाल कर इस धंधे का अंत कराने हेतु प्रयास भी किये गये हैं। यह उपन्यास वेश्याओं के जीवन की घटनाओं को प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में वेश्याओं की मौजूदगी प्राचीन काल से ही चली आ रही है। बदल रहा है वेश्याओं की जीवन-शैली और समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण। नारी का अर्थ यदि सृजन, प्रकृति और सम्पूर्णता है, तो आज इस विश्वरूपी बाजार में तीनों नीलाम हो रहे हैं। यह नीलामी जीवन की नसतोड़ यंत्रणाओं और भुखमरी की कोख से उपजती है। अधिकांश लोगों में यह गलत धारणा विकसित हो चुकी है कि वेश्याएँ बहुत ठाट-बाट से रहने के लिए यह रास्ता अपनाती है। इस संदर्भ में लेखिका इस उपन्यास की भूमिका में कहती हैं- "85 प्रतिशत वेश्यावृत्ति धोखाधड़ी से उपजती है, यह धोखाधड़ी प्रेम के झूठे वादे, नौकरी का प्रलोभन, शहरी चकाचौंध से लेकर एक उच्च और सम्मानित जीवन के सब्जबाग दिखाने तक होती है।"[5] इन सबके केन्द्र में वैश्वीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है। इसमें वैश्वीकरण के आर्थिक विकास की बेचैनी से उपजे छलावों का असर स्पष्ट दीखता है।

3. पत्ताखोर :–

'पत्ताखोर' नशाखोरी की समस्या को उजागर करने वाला उपन्यास है। वैश्वीकरण से उपजा अलगाववाद इस उपन्यास के केन्द्र में है। अकेलापन, संत्रास, घुटन आदि के कारण आज की युवा-पीढ़ी नशाखोरी की समस्या में उलझती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी दिशाहीन होकर भटकती रहती है। ये भटकाव गरीबी, बेकारी एवं अकेलेपन से उत्पन्न होती है। अकेलापन जीवन के प्रति ऊब उत्पन्न करता है, जिससे मुक्ति पाने के लिए युवा गांजा, हेरोइन, अफीम, ताड़ी जैसी नशीले पदार्थो का सेवन करने लगता है। यह मनोवृत्ति भी कहीं न कहीं इस तथ्य के विकास में कार्यरत है। गोपालराय का कथन समीचीन है- "अस्तित्ववादी विचारधारा ने, जिसका आधुनिक जीवन पर पर्याप्त प्रभाव दीखता है, आज के जीवन में अजनबीपन के बोध को रेखांकित किया है।"[6]

उपन्यास का प्रमुख पात्र आदित्य बचपन से ही संगीत सीखना चाहता था। वह संगीत के माध्यम से जिन्दगी के आनन्द की खोज में है। उसमें कुछ कर गुजरने की आग है, किन्तु जिन्दगी के भयावह एकान्त और सन्नाटों ने उसे आतंकित किया हुआ है। आदित्य के पिता हेमन्तबाबू और माता वनश्री दोनों अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। कामकाजी माँ-बाप के कारण आदित्य अकेला पड़ जाता है। वह माँ से जितना डरता था, उतना ही पिता से प्यार

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

करता था। तनावों के बावजूद वह बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक से उत्तीर्ण होता है। अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए वह इधर-उधर घूमने जाता है। इसी बीच अपने मित्र के बड़े भाई की संगत से वह गांजा एवं ताड़ी जैसी नशीली व मादक चीजों का सेवन करने लगता है। यह जानकर पिता उसे समझाने की कोशिश करते हैं, किन्तु आदित्य इसका आदी हो जाता है।

4. सेज पर संस्कृत–

वैश्वीकरण ने विश्व के अनेक सांस्कृतिक सम्पन्न देश में संस्कृति पर भी नकारात्मक असर छोड़ा है। अर्थ की अंधी दौर और उसकी चकाचौंध में धर्म भी लपेटे में आ गया है। भारत जैसे सांस्कृतिक सम्पन्न देश में भी धर्म के बीच अर्थ की महत्ता बेहद महसूस की जाने लगी है। जैन धर्म पर आधारित उपन्यास है 'सेज पर संस्कृत'। उपन्यास की प्रधान नायिका संघमित्रा अपनी माँ और छोटी बहन छुटकी के साथ अजीमगंज में रहती है। आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण उसके पिता और छोटे भाई की मौत हो जाती है। संघमित्रा अपने पुश्तैनी व्यापार को आगे बढ़ाती है। जैनधर्म में विश्वास रखनेवाली उसकी माँ अपनी बेटियों को दीक्षा दिलवाकर परिवार को सुरक्षित रखना चाहती है। संघमित्रा इसके लिए तैयार नहीं होती है, किन्तु छुटकी संघमित्रा के विरोध करने पर भी दीक्षा के लिए तैयार हो जाती है। छुटकी दीव्यप्रभा बनकर आश्रम में रहती है, जहाँ उसकी मुलाकात विजयेन्द्र मुनि से होती है। दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगते है और विवाह करना चाहते हैं। इसके लिए दोनों जैनधर्म छोड़ने का निश्चय करते हैं। वहाँ से भागने के लिए विजयेन्द्र मुनि अपने मित्र अभयमुनि का सहयोग लेते हैं। अभयमुनि विजयेन्द्र मुनि से वादा करता है कि वह दिव्यप्रभा को लेकर रेलवे स्टेशन आएगा, किन्तु रात की एकान्त अवस्था को देखकर वह दिव्या का बलात्कार कर देता है। इस घटना के बाद वह विजयेन्द्र से कहता है कि दिव्या नहीं आई, उसने धोखा दिया है। जब दिव्या माँ बनने वाली होती है, तो संघ के लोग उसे बाहर निकाल देते हैं। इसके बाद दिव्या को न ही माँ का सहारा मिलता है और न ही धर्म का। संघमित्रा कलकत्ता में पीड़ित एवं शोषित नारियों की सेवा में कार्यरत रहती है। कई वर्षों बाद एक बालिका रोती हुई संघमित्रा के पास आती है और अपनी माँ के विषय में कहती है कि उसकी माँ मृत्युशय्या पर है और आपसे मिलना चाहती है। जब संघमित्रा वेश्यामंडी पहुँचती है, तो वहाँ उसे पता चलता है कि वह और कोई नहीं, बल्कि उसकी बहन छुटकी है। छुटकी कैंसर से पीड़ित रहती है। उसके साथ हुए प्रत्येक घटना का संघमित्रा को पता चलता है। अपनी बहन को बचाने में वह असफल रहती है। प्रतिशोध की आग में संघमित्रा अभयमुनि की हत्या कर देती है। उसे आजीवन कारागार की सजा मिलती है। उपन्यास के अंत में छुटकी की बेटी ऋषिकन्या को उसका पिता मिल जाता है।

5. सूखते चिनार–

वैश्वीकरण ने विश्व को एक विश्वग्राम और एक विश्व बाजार के रूप में पेश किया है, लेकिन उसने जिस अर्थ को प्रमुखता देकर मानव के बीच में रखा, उसने मनुष्य को आत्मकेन्द्रित होने का अवसर दिया। इतना ही नहीं विश्व में कई ऐसे देश हैं, जहाँ धार्मिक और आर्थिक आतंकवाद ने पाँखें फरफरायीं। वैश्वीकरण के जिस दो प्रकार के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की बातें की जाती हैं, उसमें ये दोनों ही आतंकवाद समाहित होते हैं। वैश्वीकरण ने मनुष्यों को, जहाँ एक जगह लाने की कोशिश की, वहीं आतंकवाद ने तोड़ने का प्रयत्न किया। इस वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में आतंकवाद एक वैश्विक त्रासदी भी बन गई है, जिससे कमोवेश प्रत्येक राष्ट्र पीड़ित है। जैसा कि मैने पहले ही कहा हैं कि इस आतंकवाद के पीछे धार्मिक आतंकवाद, सांस्कृतिक आतंकवाद और वैश्वीकरण के केन्द्र में आ चुकी आर्थिक आतंकवाद है। प्रस्तुत उपन्यास में आतंकवाद के उन्हीं

© Copyright @ Authors

दो पहलुओं पर मधु काँकरिया ने गहरा प्रकाश डाला है। इस उपन्यास का ताना बाना कश्मीरी आतंकवाद से बुना गया है, जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के बीच फलता-फूलता है। इसके पीछे कई ऐसे आतंकवादी संगठनों सहित अनेक कट्टरपंथी राष्ट्रों का भी हाथ समझा जा सकता है। 'आतंकवाद' आज सबसे बड़ी वैश्विक समस्या है। 'सूखते चिनार' इक्कीसवीं सदी की सबसे प्रमुख समस्या आतंकवाद और उनसे जुड़ी विद्रूपताओं पर लिखा गया सबसे चर्चित उपन्यास है। इसमें फौजी जीवन की गाथा है। कश्मीरी आतंकवाद, कट्टरपंथी मुसलमानों के पाखंडी विचार व गरीब एवं लाचार लोगों का आतंकवाद की ओर उन्मुख होने जैसी प्रवृत्तियों को इस उपन्यास में वर्णित किया गया है। 'भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास' नामक पुस्तक की भूमिका में नीरु अग्रवाल का कथन है कि- "बदलते हुए यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास एक सुगम माध्यम है। यह सत्य की खोज और असत्य का ध्वंस करनेवाला साहित्यिक हथियार है, क्योंकि उपन्यास का संबंध सच, न्याय और जनपक्षधरता से ज्यादा है।"[7]

6. हम यहाँ थे–

वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण ने अनेक सांस्कृतिकताप्रधान देशों के पहनावे, ओढ़ावे, रहन-सहन, खान-पान, धार्मिक, सामाजिक चेतना, शिक्षा-दीक्षा और आध्यात्मिक चेतना पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। इसने सांस्कृतिक संपन्न ऐसे देशों की बनावट को ही बदलकर रख दिया है। ये बदलाव कई मायनों में वैश्विक परिदृश्य में अच्छे भी थे और समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा की दृष्टि से नकारात्मक भी साबित हुए। ऐसे कई बदलाव देश, समाज, संस्कृति और उस देश की मानव जाति की जीवन-शैली को गहरे रूप में प्रभावित करते हैं। हिन्दी की प्रसिद्ध कथाकार मधु काँकरिया द्वारा लिखित 'हम यहाँ थे' उपन्यास जीवन और राष्ट्र के ऐसे बहुविध परिवर्तनों की पड़ताल करता है, जिसमें वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों के दिग्दर्शन होते हैं। अनेक वैश्विक समस्याओं को उजागर करते प्रस्तुत उपन्यास में आदिवासियों की समस्या, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और जंगली जानवरों को बेघर करते दिखाया गया है। शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव गाँव पर पड़ रहे हैं। वहाँ की वेशभूषा, रहन-सहन का भी साफ चित्र इस उपन्यास में झलकता है। इस उपन्यास की नायिका दीपशिखा के माध्यम से अस्मिता की तलाश की गई है। भुखमरी और गरीबी के कगार पर खड़े परिवार की दास्तान दिल को छू लेने वाली है।

निष्कर्ष–

वैश्वीकरण और उद्योगजनित पूँजीवादी संस्कृति से उत्पन्न व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, नारी का आत्मनिर्भर व स्वतंत्र होना, मूल्यगत टकराव एवं आर्थिक अभावों और दबावों से उत्पन्न परम्परागत संयुक्त परिवार विघटित हो रहा है। इनके उपन्यासों में आधुनिकता के साथ-साथ बदलती दुनिया का चित्रण किया गया है, जिससे नई पीढ़ी को एक नया जीवन दृष्टिकोण मिलता है। प्रत्येक पात्र नये विचारों के साथ पाठकों के सामने आता दिखाई देता है। इनके उपन्यास भले ही समाज का बदलता चित्र प्रस्तुत करता हो, लेकिन आनेवाली पीढ़ी के लिए नया रास्ता तैयार करता है। मधु काँकरिया के उपन्यासों में गरीबी व भूख के कारण उत्पन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है, जिसके केन्द्र में वैश्वीकरण है। इस वैश्विक संकट के कारण अनेक उद्योगों का क्षरण होता नजर आता है, जिससे पलायनवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई। इनके उपन्यासों में नारी अस्मिता की तलाश के साथ-साथ वैश्वीकरण से उपजे आतंकवाद को भी शामिल किया गया है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

संदर्भ-सूची–

1. कथाकार मधु काँकरिया– डॉ0 सुनीता कावले, रोली प्रकाशन, कानपुर, 2011, पृ0- 115
2. खुले गगन के लाल सितारे– मधु काँकरिया, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ0- 96
3. मधु काँकरिया का रचना संसार– डॉ. उषा कीर्ति राणावत, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृ0- 17
4. वही, पृ0- 19
5. सलाम आखिरी– मधु काँकरिया, राजकमल पेपरबैक्स, दिल्ली, 2016, भूमिका से
6. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पृ0-209
7. भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास– नीरू अग्रवाल, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2018, भूमिका से।

© Copyright @ Authors